प्यासी मीन (१५)

साई सियाराम सनेह में नितु लीन रहे। जियें जल में प्यासी सदां मीन रहे।।

अलौकिक नेह सां नातो नाथ सां तो जोड़ियो रही रस राज़ मगनु वर खे वण विलयुनि वोड़ियो रुग़ो प्रिया प्रीतम जे पद कमलिन कुशल चहे।।

न का निंड नेणिन न भोज़न जी काई ओन रखी रात द़ीहं लीलां जे चिंतन जी चाशनी आ चखी रूप सागर में दुब़ी द़ेई अमर लाभ लहे।।

रिशी मुनी धन्य चविन प्रेम जो परिवाहु दिसी प्रीतम भी प्रेम मगनु थिये अबल अनुराग पसी तुंहिजो मटु तूंई कोकिल गद् गद् कंठ साणु चवे।।

रटे नितु नामु युगल आंसुनि जी झरिड़ी आ लाती पल पल पढ़ंदा रहिन तुंहिजी प्रेम जी पाती जै जै मैगसि चन्द्र जी सदाई गगन गूंज रहे।।